• कविता...

## अपना घर

अपने घर की बात अलग है
लगता है घर प्यारा
कच्चा-पक्का ऊंचा-नीचा
सायबान ओसारा
छत लगती है इंद्रलोक-सी
आंगन बागों जैसा
दरवाजे, घर का चबूतरा
मीठे रागों जैसा
चिड़ियां साथिन होतीं, जिनसे
घर गूंता हमारा
दिल्ली है, बंबई शहर है
भवन बीस तल वाले
आसमान को छूते हैं ये
लगते बड़े निराले
मगर खुशी की तो बहती है
अपने ही घर धारा
घर का हर कमरा-बरामदा
हर खिड़की-दरवाजा
जैसे हर क्षण हमें बुलाते
कहते आ जा, आ जा
घर में मां है, थपकी देती
सो जा राजदुलारा
बाहर अगर कहीं जाते हैं
घर की यादें आतीं
बहुत दूर हों, तब तो अक्सर
आंखें भर-भर जातीं
घर खिल-खिल हंसने लगता है
ज्यों संसार हमारा
अपने घर की बात अलग है
लगता है घर प्यारा।

■ श्रीप्रसाद

• चुटकुला...

**भगवान ने एक बुढ़े से पूछा अब तुम्हारा बुढ़ापा आ गया है। कर्म के हिसाब से मुझे तुमको बीमारी देनी होगी।**
**तुम्हारी भक्ति की वजह से दो में से एक बीमारी चुनने का मौका देता हूं।**
**या तो याददाश्त खो जाएगी या हाथ पैर कांपेंगे।**
**बुढे ने अपने मित्र से पूछने की इजाजत लेकर मित्र से पूछा।**
**मित्र ने कहा कि हाथ पांव कांपने की बीमारी मांगना।**
**क्योंकि गिलास में से एकाध पेग छलक जाए तो कोई बात नहीं। पर बोतल रखी कहां हैं ये ही भूल जाओ तो भारी मुश्किल हो जाएगी।**

• जानकारी...

## सऊदी अरब में गिरी बर्फ

पिछले दिनों सऊदी अरब में प्रकृति का चमत्कार देखने को मिला। जब सऊदी अरब जैसे रेगिस्तानी देश में आसमान से बर्फ गिरने लगी और रेत की गर्म चादर के ऊपर बर्फ की ठंडी चादर बिछ गई। इस घटना ने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी तरफ खींचा। जब तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए, तो लोगों को लगा कि ये फोटोज और वीडियो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से जनरेट किए गए हैं, लेकिन जब सच सबके सामने आया और इस बात की पुष्टि हुई कि सच में सऊदी अरब जैसे रेगिस्तानी देश में बर्फ गिरी है, तो लोग हैरान रह गए, लेकिन क्या आप इसके कारण के बारे में जानते हैं?

**▸▸ तबुक और ट्रोजेना की पहाड़ियों पर हुई बर्फबारी**

ये स्नोफॉल या बर्फबारी सऊदी अरब के उत्तरी इलाके तबुक और ट्रोजेना की पहाड़ियों पर हुई, जिसने सभी को हैरत में डाल दिया। तस्वीरों और वीडियो में देखने से लगा जैसे यह कोई हिल स्टेशन हो। भारी बर्फबारी की वजह से उस इलाके में अचानक से ठंड बढ़ गई और तेज हवाओं की वजह से लोगों को अपने घरों में कैद होने के लिए मजबूर होना पड़ा। रिपोर्ट्स की मानें तो बर्फबारी की वजह से तापमान लगभग 4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। हालांकि सऊदी अरब के राष्ट्रीय मौसम विज्ञान केंद्र (एनसीएम) ने देश के उत्तरी हिस्सों में बर्फबारी के संकेत पहले ही दिए थे और लोगों से सावधानी बरतने की अपील भी की थी.

**▸▸ सऊदी अरब में बर्फबारी की वजह**

सऊदी अरब जैसी रेगिस्तानी गल्फ कंट्री में जहां तापमान 45 से 50 डिग्री सेल्सियस तक रहता है, वहां अचानक बर्फबारी होना लोगों के लिए किसी अचंभे से कम नहीं है। इस बर्फबारी के पीछे एक मुख्य वजह यह है कि सऊदी अरब के जिस इलाके तबुक में यह बर्फबारी हुई है, वह इलाका समुद्र तल से लगभग 26,000 मीटर से भी ज्यादा ऊंचा है, जिसकी वजह से इस इलाके में सर्दियों के मौसम में अत्यधिक ठंड देखने को मिलती है. लोगों को जानने की जरूरत है कि साल 2024 में भी तबुक (Tabuk) क्षेत्र की जबल अल-लॉज की पहाड़ियों पर बर्फबारी हुई थी। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार रेगिस्तानी देश सऊदी अरब में बार-बार स्नोफॉल होने का सबसे मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन है, जिससे मौसम में तेजी से बदलाव आ रहे हैं, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। सऊदी अरब के मौसम विभाग के प्रवक्ता हुसैन अल-कहतानी के अनुसार, इन इलाकों में तेज ठंडी हवाएं उत्तरी सऊदी अरब के अंदर बहने लगीं, जो बारिश लाने वाले बादलों से टकराईं, जिसकी वजह से बर्फबारी देखने को मिली।

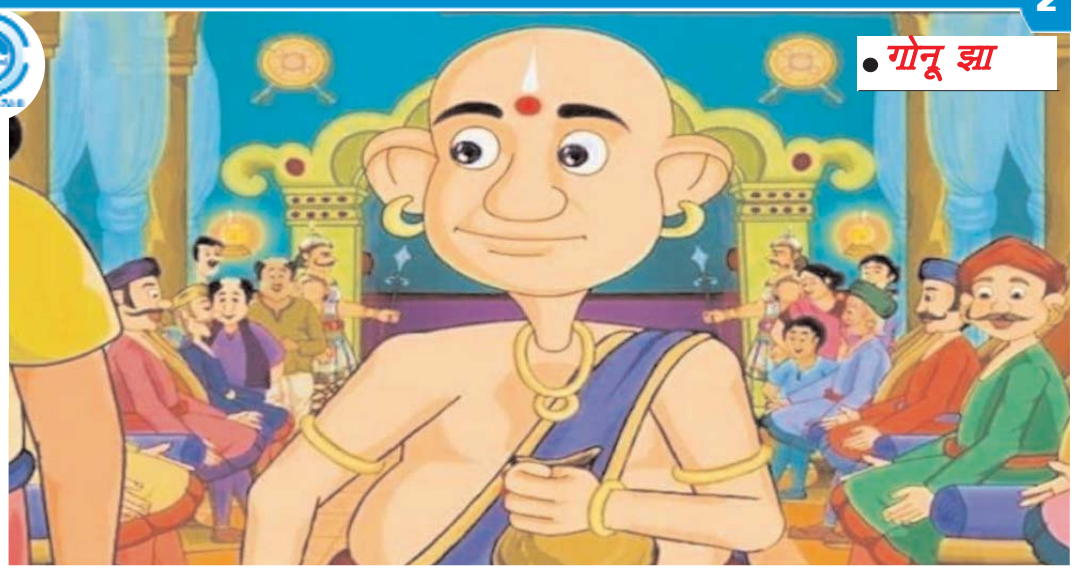

• गोनू झा

# पंडिताइन का सहारा

**तब दरबार का सबसे स्वस्थ कारिंदा बोला – 'महाराज, मैं भी एक बार बहुत बीमार हो गया था। वैद्य की चिकित्सा का मेरे रोग पर कोई असर नहीं हुआ तब मेरे शिकारी मामा ने मेरे लिए शेर के दूध की व्यवस्था की।**

**बाघ का मांस घिसकर शेर के दूध में सुबह–शाम चटाया गया जिससे मैं फिर से सेहतमंद हो गया।'**
**महाराज में एक अजीब–सी उत्सुकता पैदा हो गई। उन्होंने पूछा– 'मगर शेर का दूध और बाघ का मांस आएगा कहाँ से?'**

फिर उसने दरबारियों से ऊँची आवाज में कहा -'भाइयो, यदि आप में से कोई अच्छी सेहत पाने का कोई नुस्खा जानता हो तो वह महाराज को अवश्य बताएँ।'

संयोग की बात थी कि उस दिन गोनू झा तब तक दरबार में नहीं पहुँचे थे, जिसके कारण दरबारियों को अपना जाल फैलाना आसान हो गया था।

तीसरे दरबारी का आह्वान सुनने के बाद थोड़ी देर तक दरबार में सन्नाटा-सा छाया रहा।

सबको चुप देखकर महाराज ने स्वयं कहा - 'बताइए! आप लोगों के पास कोई जानकारी हो तो आवश्य बताइए!'

तब दरबार का सबसे स्वस्थ कारिंदा बोला - 'महाराज, मैं भी एक बार बहुत बीमार हो गया था। वैद्य की चिकित्सा का मेरे रोग पर कोई असर नहीं हुआ तब मेरे शिकारी मामा ने मेरे लिए शेर के दूध की व्यवस्था की। बाघ का मांस घिसकर शेर के दूध में सुबह-शाम चटाया गया जिससे मैं फिर से सेहतमंद हो गया।'

महाराज में एक अजीब-सी उत्सुकता पैदा हो गई। उन्होंने पूछा- 'मगर शेर का दूध और बाघ का मांस आएगा कहाँ से?'

तभी एक दरबारी ने कहा-'महाराज! यह काम तो कोई सूझ-बूझवाला आदमी ही कर सकता है।'

दूसरे ने कहा-'दरबार में गोनू झा से अधिक सूझ-बूझ वाला व्यक्ति और कोई नहीं है।

महाराज को भी यह बात ठीक लगी। वे गोनू झा की प्रतीक्षा करने लगे।

गोन झा जैसे ही दरबार में आए, वैसे ही महाराज ने उन्हें आज्ञा दी - 'पंडित जी, मेरे लिए प्रतिदिन एक गिलास शेर के दूध की व्यवस्था करें और हो सके तो थोड़े से बाघ के मांस की भी।'

गोनू झा अचरज में पड़ गए और कुछ कहना चाहा मगर महाराज ने उन्हें कहा-'अगर मगर कुछ भी नहीं, यह व्यवस्था आपको करनी ही पड़ेगी।'

गोनू झा चुप रह गए। कहते भी क्या? दरबार से लौटकर घर आए तो अनमने से रहे। पंडिताइन ने उन्हें चिन्तित देखकर पूछा कि आखिर बात क्या है, तो उन्होंने पूरी बात बता दी। पंडिताइन ने उन्हें कहा कि वे चिन्तित नहीं हों। सामान्य रहें। आज रात में ही वह खुद इस समस्या का निदान कर देगी। गोनू झा ने पूछा भी कि मगर कैसे? तो पंडिताइन ने उन्हें कहा कि इसकी चिन्ता वे नहीं करें कि कैसे, बस कल से प्रसन्नचित्त होकर समय पर दरबार जाएँ। इसके बाद गोनू झा को भोजन करा लेने के बाद पंडिताइन एक थापी और गंदे कपड़ों की एक पोटली लेकर महाराज के सरोवर पर पहुँच गई। महाराज के कमरे के निकट पड़ने वाले सरोवर के पाट पर बैठकर वह जोर-जोर से कपड़ा थापी से पीटने लगी। थापी की आवाज से महाराज की नींद खुल गई और उन्होंने पंडिताइन को पकड़वाकर अपने पास बुलवा लिया। पंडिताइन को देख महाराज अचरज में पड़ गए और पूछा-'क्या बात है? इतनी रात को आप राज-सरोवर में कपड़ा धो रही हैं?'

पंडिताइन ने जवाब दिया-'महाराज! दरबार से लौटते ही पंडित जी ने एक बच्चा जना है। उनकी तीमारदारी के बाद गंदे कपड़े धोने इस समय यहाँ आ गईं।'

महाराज चकराए 'अरे! क्या बोल रही हैं आप? मर्द भी कहीं बच्चा देता है? असम्भव।'

तपाक से पंडिताइन ने कहा- 'जब शेर दूध दे सकता है, तो मर्द बच्चा क्यों नहीं पैदा कर सकता?'

पंडिताइन की बात सुनकर महाराज लज्जित हुए।

दूसरे दिन दरबार में उन दरबारियों की शामत आ गई जिन्होंने शेर के दूध की सलाह दी थी। उनकी हालत देखकर गोनू झा मन ही मन हंस रहे थे।

-समाप्त

• रोचक...

## महंगे रेस्टोरेंट में खाना कम

*फाइन डाइनिंग या महंगे रेस्टोरेंट में खाने की मात्रा कम रखने का सबसे बड़ा कारण यह है कि वहां खाना जल्दी-जल्दी खाने के लिए नहीं, बल्कि उसके स्वाद को समझने के लिए परोसा जाता है। गेस्ट हर डिश को ध्यान से, धीरे-धीरे और स्वाद लेकर खाता है। लक्जरी और महंगे रेस्टोरेंट या होटलों में गेस्ट के सामने एक समय पर एक ही डिश रखी जाती है, क्योंकि यहां अक्सर गेस्ट के लिए करीब 4 से 8 कोर्स मील होता है। हर कोर्स में अलग-अलग डिश होती है, जैसे स्टार्टर, मेन कोर्स, इसके बाद डेजर्ट और ड्रिंक भी परोसे जाते हैं। इससे गेस्ट बिना किसी परेशानी के सभी कोर्स को आराम से एन्जॉय कर पाता है। खाने में कई सारे कोर्स होने का मतलब टेस्टिंग मेनू से होता है। यह एक खास मेनू होता है, जिसमें 5 से 15 छोटे-छोटे कोर्स दिए जाते हैं। यह आइडिया फ्रेंच शब्द 'डेगुस्टेशन' से आया है, जिसका मतलब होता है अलग-अलग खाने को थोड़ा-थोड़ा चखना।*

• नॉन वेजिटेरियन...

*नॉन वेजिटेरियन खाने की आदतों के मामले में नागालैंड राष्ट्रीय स्तर पर पहले स्थान पर आता है। यहां लगभग पूरी आबादी मांस खाती है जो आदिवासी परंपराओं, जंगल पर आधारित जीवन और डेयरी उत्पादों पर निर्भरता को दिखाता है। आपको बता दें कि नागालैंड के अलावा पश्चिम बंगाल में 99.3% और केरल में 99.1फीसदी लोग नॉन वेजिटेरियन हैं। ज्यादा मांस खाने के बावजूद भी नागालैंड का मुख्य भोजन चावल है। यहां पर लगभग हर खाना चावल के साथ ही खाया जाता है। मांस, उबली हुई सब्जी या फिर फर्मेंटेड चीज सभी कुछ चावल के साथ ही खाया जाता है।*